AAP-009-001203 Seat No. _____

First Year B. R. S. (CBCS) (Sem. II) Examination

April / May – 2016

FND-222 : Hindi Comp. Found. - 2

Faculty Code : 009
Subject Code : 001203

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours] [Total Marks : **70**

सूचना : (१) विभाग – १ MCQ – २० प्रश्न – गुण – २० ।

(२) विभाग – २ वर्णनात्मक ।

(३) प्रश्न २ से ६ तक के अंक समान है ।

विभाग – १ (MCQ)

१ निम्नलिखित प्रश्नों के लिए योग्य विकल्प चूनकर सही उत्तर दें : २०

(१) मैथिलीशरण गुप्तजी का जन्म कौन–से साल में हुआ था ।

(A) १८८६ (B) १८९०

(C) २००६ (D) २०१६

(२) मैथिलीशरण गुप्तजी के पिता किसके भक्त थे ?

(A) शिवभक्त (B) रामभक्त

(C) हनुमानभक्त (D) कृष्णभक्त

(३) गुप्तजी के पिताजी क्या व्यवसाय करते थे ?

(A) वकील थे (B) जमींदार थे

(C) व्यापारी थे (D) कुछ नहीं

(४) गुप्तजी का जन्म किस गाँव में हुआ था ?

(A) अलाहाबाद (B) लमही

(C) कलकता (D) चिरगाँव (बनारस)

(५) गुप्तजी के काव्यगुरु कौन थे ?

(A) प्रेमचंदजी (B) महावीरप्रसाद द्विवेदी

(C) यशपालजी (D) दिनकरजी

(६) पुस्तक के रूप में गुप्तजी की प्रथम रचना कौन–सी थी ?

(A) रंग में भंग (B) साकेत

(C) विष्णुप्रिया (D) यशोधरा

(७) गुप्तजी की कविताएँ नियमित रूप से किस पत्रिका में छपती थी ?

(A) जागरण (B) हंस

(C) सरस्वती पत्रिका (D) हिंदुस्तानी जबान

(८) पंचवटी कथा का आधार रामायण का कौन–सा अध्याय है ?

(A) १७ और १८ (B) १–२

(C) ६–७ (D) १२–१३

(९) वनवास के दौरान राम ने किस नदी के तट पर पंचवटी बनाकर निवास किया था ?

(A) सरयू (B) साबरमती

(C) गोदावरी (D) तापी

(१०) पंचवटी काव्य में गुप्तजी ने कितने छंदों की रचना की है ?

(A) १२८ (B) १४५

(C) ११८ (D) ११२

(११) पंचवटी काव्य की भाषा कैसी है ?

(A) देवनागरी (B) संस्कृत

(C) साहित्यिक खडीबोली (D) उर्दू

(१२) पंचवटी काव्य के नायक कौन है ?

(A) राम (B) लक्ष्मण

(C) भरत (D) शत्रुघ्न

(१३) पंचवटी काव्य में लक्ष्मण को किसका सत्संग मिला है ?

(A) डोक्टरों का (B) वैज्ञानिकों का

(C) ऋषि और मुनिओं का (D) देवों का

(१४) शूर्पणखा ने दानवी रूप कब धारण किया ?

(A) लक्ष्मण के पास आते वक्त (B) सीता के सामने

(C) राम के सामने (D) लक्ष्मण के इनकार करने पर

(१५) पंचवटी काव्य में सीता के चरित्र की विशेषता क्या है ?

(A) बहुत ही कोमल

(B) आरामप्रिय

(C) उद्योगपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाली

(D) कठोर व्यवहार करने वाली

(१६) पथ्थर की लकीर होना – मुहावरे का अर्थ क्या होता है ?

(A) सत् प्रतिशत सही होना (B) पथ्थर पर काम करना

(C) पथ्थर का सेतु बनाना (D) तीनों में से कोई भी नहीं

(१७) दांतों तले ऊँगली दबाना – मुहावरे का अर्थ क्या होता है ?

(A) दांत खराब होना (B) कुछ चबाना

(C) दांतों से नाखून काटना (D) चकित रह जाना

(१८) नानी याद आ जाना – मुहावरे का अर्थ बताईए ।

(A) प्रियजनों को याद करना

(B) छोटे लोगों को याद करना

(C) मुसीबत में पड जाना

(D) संकटों का सामना करना

(१९) जिसकी लाठी उसकी भेंस – मुहावरे का अर्थ बताईए ।

(A) पशुओं को पालना (B) लाठी चलाना

(C) शक्तिवान का ही सब कुछ होना (D) तीनों में से कुछ भी नहीं

(२०) पंचवटी काव्य की शुरुआत कैसे हुई है ?

(A) नमस्कार से (B) मंगलाचरण से

(C) पटाक्षेप से (D) सूचना से

विभाग – २

२ पंचवटी खंडकाव्य के नायक लक्ष्मण का चरित्र–चित्रण कीजिए । १०

३ पंचवटी काव्य में कवि ने जो मौलिक परिवर्तन किये है उसके बारे में लिखें । १०

अथवा

३ पंचवटी खंडकाव्य के काव्यलक्षणों की चर्चा कीजिए । १०

४ पंचवटी खंडकाव्य के कवि मैथिलीशरण गुप्तजी का जीवन–परिचय दीजिए । १०

अथवा

४ पंचवटी काव्य में शूर्पणखा का चरित्र–चित्रण । १०

५ निम्नांकित संदर्भों में से किन्हीं दो की व्याख्या कीजिए । १०

(१) हाँ नारी ! किस भ्रम में है तू, प्रेम नहीं यह तो है मोह,
आत्मा का विश्वास नहीं यह है तेरे मन का विद्रोह ।
विष से भरी वासना है यह, सुधा–पूर्ण वह प्रीति नहीं,
रीति नहीं, अनरीति और यह अति अनीति है, नीति नहीं ॥

(२) इच्छा होती है, स्वजनों को एकबार वन में लाऊँ,
और यहाँ कि अनुपम महिमा उन्हें घुमाकर दिखलाउँ ।
विस्मीत होंगे देख आर्य को वे, धर की भांति प्रसन्न,
मानो वन विहार में रत है ये वैसे ही श्री संपन्न ॥

(३) ''तुम अनुपम ऐश्वर्यवती हो, एक अकिंचन जन हूँ में ।
क्या आतिथ्य करुँ, लज्जित हुँ, वन–वासी निर्धन हुँ मैं ।''

६ निम्नलिखित परिच्छेद का गुजराती भाषा में अनुवाद कीजिए । १०

माता अपने सभी पुत्रों को समान भाव से चाहती है, इसी प्रकार पृथ्वी पर बसने वाले जन बराबर हैं । उनमें ऊँच और नीच का भाव नहीं है । जो मातृभूमि के हृदय के साथ जुड़ा हुआ है, वह समान अधिकार का भागी है । नगर–जनपद, पुर और गाँव, जंगल और पर्वत नाना प्रकार के जनों से भरे हुए हैं । ये जन अनेक प्रकार की भाषाएँ बोलने वाले और अनेक धर्मों के मानने वाले हैं, फिर भी वे मातृभूमि के पुत्र है और इस कारण उनका सौहार्द भाव अखंड है । सभ्यता और रहन–सहन की दृष्टि से जन एक–दूसरे के आगे पीछे हो सकते हैं, किंतु इस कारण से मातृभूमि के साथ उनका जो सम्बन्ध है, उसमें कोई कदभाव उत्पन्न नहीं हो सकता । पृथ्वी के विशाल प्रांगण में सब जातियों के लिए समान क्षेत्र है । इतिहास के अनेक उतार चढाव पार करने के बाद भी राष्ट्र निवासी जन नई उठती लहरों से आगे बढ़ने के लिए आज भी अजर अमर है ।